शोध मंथन Vol. XIV No.III July-Sep. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

शिक्षा का समाज पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

प्राप्तिः 28.08.2023
स्वीकृतः 17.09.2023

अखिलेश कुमार
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
ति०मां० भागलपुर वि०वि० भागलपुर
ईमेलः *sharmaakhilesh25732@gmail-com*

71

सारांश

समाज पर शिक्षा का प्रभाव पड़ता है। जहाँ शिक्षा होती है, वह समाज शिक्षित तथा सभ्यता की ओर अग्रसर होता है। वह सृजन करता है शिक्षा के अभाव में व्यक्ति अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करता है जिससे समाज का अहित होता है। समाज का शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सामाजिक परिवर्तनों तथा आर्थिक दशाओं का शिक्षा पर विशेष प्रभाव पड़ता है। साथ ही जैसी राजनीति होगी, जैसे बच्चों को धार्मिक शिक्षाएं दी जाएगी वैसे ही समाज की भी स्थिति होगी इसलिए समाज में सुधार लाना है तो शिक्षा में भी सुधार लाना होगा। अतः कहा जा सकता है कि समाज पर शिक्षा का प्रभाव पड़ता ही है। इतना ही नहीं अपितु किसी समाज में सामाजिक परिवर्तनों के साथ–साथ उसकी शिक्षा में भी परिवर्तन होते चलते हैं और जिस समाज में जैसे शिक्षा की व्यवस्था की जाती है वैसी ही उस समाज की भौगोलिक स्थिति पर पकड़ और उसके स्वरूप एवं उसकी सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन होने लगता है।

मुख्य बिंदु

शिक्षा और समाज का स्वरूप, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक वर्तमान समाज में शिक्षा।

अवधारणा शिक्षा का समाज पर प्रभाव

एक और यदि यह बात सत्य है कि समाज शिक्षा को प्रभावित करता है तो दूसरी और यह बात सत्य है कि शिक्षा समाज के स्वरूप को निश्चित करती है और उसकी सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती है। शिक्षा मानव समाज की आधारशिला है। वह समाज का निर्माण करती है उसमें परिवर्तन करती है और उसका विकास करती है। शिक्षा एक सामाजिक संस्था के रूप में हमारे समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और बदले में समाज शिक्षा प्रणाली के विकास और इसकी संरचना में एक भूमिका निभाता है। शब्द सोसाइटी लैटिन शब्द सोसाइट्स पर आधारित है। जिसका अर्थ है मित्र या सहयोगी और इसका उपयोग लोगों के समूह के बीच संबंध या बातचीत का वर्णन करने के लिए किया जाता है। शैक्षिक संरचना सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के माध्यम से जटिलता प्राप्त करती है और इस संबंध में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के सदस्यों को समाज के लगातार बदलते पहलुओं के अनुकूल बनने में मदद करती है।

इस संदर्भ में शिक्षा का कार्य स्कूल प्रणाली के भीतर और बाहर बहुआयामी है और इसे एक अद्वितीय संगठन और अद्वितीय पैटर्न के साथ एक आत्मनिर्भर सामाजिक प्रणाली के रूप में देखा जा सकता है। यह विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं और व्यक्तित्व के विकास के लिए व्यक्ति को सामाजिक बनाने का कार्य करता है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा की प्रक्रिया पर समाज का एक प्रमुख प्रभाव है जो प्रकृति में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक हो सकता है।

देशी विज्ञापन सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव किसी भी समाज की शिक्षा की संरचना का उसके सामाजिक सांस्कृतिक कारकों से सीधा संबंध होता है। शिक्षा की प्रक्रिया सामाजिक संरचनाओं सामाजिक मानदंडों और मूल्य प्रणालियों के साथ विकसित होती है। स्कूल मौजूदा सांस्कृतिक सामग्री को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित करने के लिए मानव समाज की एक ऐसी रचना है। अनौपचारिक सेटिंग में समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समुदाय अपने सदस्यों को समाज के मानदंडों और मूल्यों के बारे में शिक्षित करता है। परंपरागत रूप से शिक्षा ईसाई मिशनरियों, इस्लामिक मदरसा, बौद्ध मठों और अन्य धार्मिक संगठनों जैसे ध ार्मिक संस्थानों द्वारा प्रदान की जाती थी।

इन संस्थानों में विश्वासों को बदलने की धर्मांतरण विशेषता होती है और वे अपने धार्मिक आदर्शों को विकसित करते हैं। ये केवल स्थापित धर्मों तक ही सीमित नहीं हैं प्रत्येक समुदाय अपने मानदंडों और मूल्यों को प्रसारित करता है जिसके कारण समाज को एक उपतंत्र माना जाता है। शिक्षा और समाजीकरण की इस प्रक्रिया में हम अपने समाज के पूर्वाग्रहों और मतभेदों जैसे पदानुक्रम स्तरीकरण और अंतर्निहित असमानता को भी प्रसारित करते हैं। अभिजात वर्ग की संस्कृति का प्रभुत्व लैंगिक असमानता और अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक विशेषताएं भी युवा पीढ़ी तक पहुंचती हैं जिससे शिक्षा के सार को नुकसान पहुंचता है।

आर्थिक पहलू अवसर की समानता लोकतंत्र और शिक्षा के भारतीय संवैधानिक प्रावधान का मूल मूल्य है। फिर भी यह स्पष्ट हो गया है कि वर्तमान आर्थिक स्थिति में अवसर की समानता हासिल करना अत्यधिक कठिन है। समकालीन समय की आर्थिक प्रक्रिया अमीर और गरीब के बीच की खाई पैदा और बढ़ा रही है। एप्पल 2004 के अनुसार कुछ ज्ञान का आर्थिक उत्पादन से संबंध है क्योंकि अध्ययन के कुछ क्षेत्रों की बाजार में मांग अधिक है जैसे इंजीनियरिंग और चिकित्सा विज्ञान जबकि मानविकी और कला की बाजार में कम मांग है। इसलिए समाज की अर्थव्यवस्था एक महत्वपूर्ण कारक है जिसका किसी भी क्षेत्र में शैक्षिक विकास और मानव विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। कार्ल मार्क्स के अनुसार समाज की अर्थव्यवस्था समाज में सत्ता और प्रभुत्व, प्राप्त करने का मूल ढाँचा माना। इसके अलावा शिक्षा प्रणाली समाज के प्रभुत्वशाली वर्ग के नियंत्रण को वैध बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार नियंत्रण, अर्थव्यवस्था, धन पैदा कर सकती है लेकिन शैक्षिक शक्ति केवल इसे टिकाऊ बना सकती है और समाज में वैधता प्रदान कर सकती है।

राजनीतिक स्थितियाँ– राज्य राजनीतिक दलों, इसकी विचारधारा और नीति की प्रकृति सीधे शिक्षा प्रणाली और इसकी नीति की प्रकृति को प्रभावित करती है। लोकतांत्रिक राज्य लोकतांत्रिक शैक्षिक विकास के आदर्शों का दावा करते हैं हालाँकि अंतर्निहित असमानता इन राज्यों की कमजोरी है। सभी लोकतांत्रिक समाज सभी के लिए शिक्षा प्रदान करने में विफल रहते हैं विशेष

रूप से वंचित और हाशिए पर रहने वाले वर्गों को अलग–अलग स्थिति के कारण शिक्षा तक समान पहुंच नहीं मिल पाती है। इसके विपरीत समाजवादी राज्य समान शिक्षा प्रणाली का दावा करते हैं लेकिन धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के बजाय अपनी राजनीतिक विचारधारा को बढ़ावा देते हैं। यूएसएसआर का कम्युनिस्ट शासन और जर्मनी का नाजी समाजवादी सिद्धांत इसके दो सबसे अच्छे उदाहरण हैं। 1933 में नाजी जर्मन शिक्षा प्रणाली के तहत स्कूलों को बच्चों को इस तरह ढालने के लिए डिजाइन किया गया था कि वे जनता की स्वीकार्यता की परवाह किए बिना नाजी सिद्धांतों को निर्विवाद रूप से स्वीकार कर सकें।

इसी तरह भारत में अंधराष्ट्रवादी, रूढ़िवादी राजनीतिक अधिकारियों ने छद्म विश्वास प्रणाली बनाने और तर्कसंगतता के बजाय राजनीतिक उद्देश्यों वाले समाज को हाशिए पर डालने के लिए पाठ्यपुस्तकों में कई बदलाव किए हैं। उपर्युक्त कारकों का शिक्षा प्रणाली और उसके विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इन तीन कारकों के अलावा समाज की ऐतिहासिकता भौगोलिक संदर्भ और अन्य जटिलताएँ अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा प्रक्रिया और समाज के समग्र विकास को प्रभावित करती हैं। इन प्रभावों क्षमता और पारिवारिक पृष्ठभूमि में अंतर के बावजूद बच्चों को समान रूप से सम्मान का पात्र होना चाहिए, स्कूल समुदाय में समान रूप से सदस्यता का पात्र होना चाहिए और अपनी अद्वितीय क्षमता को विकसित करने का समान रूप से हकदार होना चाहिए।

1. शिक्षा और समाज की भौगोलिक स्थिति पर नियंत्रण

एक वक्त था जब मनुष्य को भौगोलिक परिस्थितियों का दास कहा जाता था। परंतु आज मनुष्य शिक्षा के द्वारा अपने भौगोलिक स्थितियों पर नियंत्रण करने में सफल हो गया है। वह दिन गए जब नदी और पहाड़ हमारे मार्ग में बाधक होते थे। शिक्षा के द्वारा हवाई जहाजों का निर्माण संभव हुआ और हवाई जहाजों से उड़कर हम नदी और पहाड़ पार ही नहीं करते अपितु बहुत कम समय में बहुत अधिक दूरी तय करते हैं। शिक्षा के द्वारा हम हर भौगोलिक इस परिस्थिति पर नियंत्रण करने में सफल होते जा रहे हैं।

2. शिक्षा और समाज का स्वरुप

शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपने समाज के संसार के और इस संपूर्ण ब्रह्मांड के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। इस ज्ञान के आधार पर ही वह अपने जीवन के उद्देश्य निश्चित करता है और इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वह भिन्न–भिन्न समाजों का निर्माण करता है। सच्चा वेदांती मनुष्य संसार की किन्ही दो वस्तुओं में भेद नहीं करता वह सबको ब्रह्ममय देखता है। लेकिन ईश्वर विमुख व्यक्ति भौतिक पैमाने पर ही सब कुछ करता है और मनुष्य–मनुष्य में अनेक प्रकार के भेद करता है। इस प्रकार भिन्न–भिन्न विचारधाराओं के व्यक्तियों के समाज का स्वरुप भिन्न–भिन्न होता है। शिक्षा एक और समाज के स्वरूप की रक्षा करती है और दूसरी और उसमें आवश्यक परिवर्तन करती है।

3. शिक्षा और समाज की संस्कृति

प्रत्येक समाज अपने सदस्यों में अपनी संस्कृति का संक्रमण शिक्षा के द्वारा ही करता है। इस प्रकार शिक्षा किसी समाज की संस्कृति का संरक्षण करती है। जब मनुष्य शिक्षित हो जाता है तो वह अपने अनुभव के आधार पर अपनी संस्कृति में परिवर्तन करता है। इस प्रकार शिक्षा समाज की संस्कृति में विकास करती है। शिक्षा के अभाव में संस्कृति के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।

4. शिक्षा और समाज की धार्मिक स्थिति

हम यह देख रहे हैं कि कोई समाज अपने शिक्षा में धर्म विशेष की शिक्षा का विधान करता है, कोई इस क्षेत्र में उदार दृष्टिकोण अपनाता है, और संसार के भिन्न–भिन्न धर्मों की शिक्षा का विधान करता है और कोई समाज अपनी शिक्षा में धर्म को स्थान ही नहीं देता। परिणामस्वरुप पहले प्रकार के समाजों में धार्मिक कट्टरता पाई जाती है दूसरे प्रकार के समाजों में धार्मिक उदारता पाई जाती है और तीसरे प्रकार के समाजों में अब एक भौतिक विज्ञान की शिक्षा से धार्मिक कूपमंडूकता एवं अंधविश्वासों का अंत होने लगा है। दूसरी और बढ़ती हुई सामाजिक अराजकता से मनुष्य अपनी शिक्षा को वास्तविक धर्म पर आधारित करने की और उन्मुख होने लगा है शिक्षा के अभाव में लोग धर्म के वास्तविक स्वरुप को समझ ही नहीं सकते।

5. शिक्षा और समाज की राजनैतिक स्थिति

शिक्षा के द्वारा मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि की जाती है और उसके आचरण को निश्चित दिशा दी जाती है। शिक्षा के द्वारा ही उसमें विचार करने एवं सत्य असत्य में भेद करने की शक्ति का विकास होता है। शिक्षा के द्वारा ही समाज में राजनीतिक जागरूकता आती है और व्यक्ति अपने अधिकार एवं कर्तव्य से परिचित होते हैं। इसी के द्वारा उनमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय भावना का विकास किया जाता है। बिना उचित शिक्षा के विधान के व्यक्ति केवल राष्ट्र का अंधा भक्त बनाया जा सकता है जागरुक नागरिक नहीं।

6. शिक्षा और समाज की आर्थिक स्थिति

एक युग था जब शिक्षा के द्वारा मनुष्य में केवल मानवीय गुणों का विकास किया जाता था। परंतु रोटी–कपड़ा, मकान की समस्या को सुलझाने वाली शिक्षा उस समय नहीं दी जाती थी ऐसा नहीं कहा जा सकता। यह तो हो सकता है कि उस समय इसके लिए उचित विद्यालयों की स्थापना न की गई हो परंतु परिवार और समुदायों में यह शिक्षा बराबर चलती रही होगी। अन्यथा इस क्षेत्र में विकास कैसे होता? आज तो शिक्षा समाज की आर्थिक स्थिति का मूल आधार है। आज भी समाज शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को किसी व्यवसाय अथवा उत्पादन कार्य में निपुण करने का प्रयत्न करते हैं। देखा यह जा रहा है कि जिस समाज में इस प्रकार की शिक्षा का जितना अच्छा प्रबंध है वह आर्थिक क्षेत्र में उतना ही तेजी से बढ़ रहा है। बिना शिक्षा के हम आर्थिक क्षेत्र में विकास नहीं कर सकते।

7. शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

एक और यदि यह बात सत्य है कि समाज शिक्षा में परिवर्तन करता है तो दूसरी ओर यह बात भी सत्य है कि शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन होते हैं। शिक्षा द्वारा मनुष्य अपनी जाति की भाषा, रहन–सहन, खान–पान के तरीके और रीति–रिवाज सीखता है। और उसके मूल्य एवं मान्यताओं से परिचित होता है। इससे उसका मानसिक विकास होता है और वह अपने समाज के तथा इस ब्रह्मांड के बारे में सदैव सोचता रहता है। समाज में रह कर वह नए–नए अनुभव प्राप्त करता है और समाज की आवश्यकता एवं समस्याओं से परिचित होता है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति और समस्याओं के हल के लिए वह विचार करता है और उनके हल खोजता है। और इससे समाज को प्रभावित करता है कभी–कभी एक व्यक्ति पूरे समाज को बदल देता है। बड़ी संख्या में शिक्षित लोग किसी समुदाय के जीवन को बेहतर बनाते हैं।

जिन क्षेत्रों में हमेशा विशेषज्ञों की तलाश रहती है उनमें बेहतर नौकरी के अवसर प्रदान करने के लिए शिक्षा अभिन्न अंग है। हम प्रोग्रामर या सर्जन जैसे अच्छे वेतन वाले व्यवसायों के बारे में बात कर रहे हैं। ये पेशे पूरे समुदाय के विकास को चलाने में भी सक्षम हैं। हालाँकि उस स्तर तक पहुँचने के लिए उन बच्चों और वयस्कों दोनों की शिक्षा में लगातार निवेश करना आवश्यक है जो पुनः कौशल या अपस्किल करना चाहते हैं। यद्यपि गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा कैरियर की सफलता का पर्याय है शिक्षा व्यक्ति के विकास के सभी चरणों में समान रूप से महत्वपूर्ण है। किसी की प्रतिभा और भविष्य के कौशल के विकास की नींव प्राथमिक विद्यालय में रखी जाती है और प्रत्येक अगला कदम छात्रों को अंतिम लक्ष्य के करीब लाता है– एक ऐसे क्षेत्र में करियर बनाना जो उन्हें पूरा करता है और उन्हें अपनी पूरी क्षमता हासिल करने की अनुमति देता है। इस प्रकार शिक्षा प्रणाली और पूरे समुदाय के प्रयास उन युवाओं को आगे बढ़ाने और शिक्षित करने में मदद करते हैं जो खुद पर विश्वास करते हैं। यदि वे प्रयास करते हैं और सही ज्ञान प्राप्त करते हैं तो वे करियर और नौकरी चुनने की स्थिति में होंगे जो बदले में उनके लक्ष्यों को पूरा करने के लिए संभावनाओं की एक पूरी श्रृंखला खोल देगा जैसे कि घर खरीदना, वित्तीय सुरक्षा, एक स्थिर परिवार, जीवन आदि। शिक्षा का अर्थ है समाज के सभी सदस्यों के बेहतर जीवन में दीर्घकालिक निवेश।

ऐसी प्रतिभाएँ विकसित करना जो मानवता का चेहरा बदल दें जब लोग निपुण और सफल होते हैं तो उनमें अपने समुदाय को वापस लौटाने की क्षमता होती है। शायद ऐसे व्यक्तियों के सबसे प्रसिद्ध उदाहरण अरबपति बिल गेट्स और वॉरेन बफे हैं जो न केवल दान में अरबों डॉलर दान करते हैं बल्कि प्रौद्योगिकियों और तरीकों के विकास में भी निवेश करते हैं जो भविष्य में लाखों लोगों की मदद कर सकते हैं (टीके, पर्यावरण संबंधी मुद्दे, भोजन) आदि। जब कोई समाज व्यवस्थित रूप से शिक्षा में निवेश करता है तो एक नए निकोला टेस्ला के निर्माण की संभावना होती है अन्यथा उसे अपनी प्रतिभा विकसित करने का मौका नहीं मिलता। यह भविष्य में एक प्रकार का निवेश है और समाज के सभी सदस्यों की क्षमता है क्योंकि उनमें से प्रत्येक इसके विकास में योगदान दे सकता है।

शिक्षा आधुनिक समाज का एक अभिन्न अंग है मानव जाति के विकास और प्रगति का श्रेय सीधे तौर पर शिक्षित लोगों को दिया जा सकता है जिन्होंने मानव समाज को आगे बढ़ाया। शिक्षा में निवेश करने से समाज में ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण संरक्षण जैसी प्रमुख चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ती है। ये चीजें सीधे जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं और इन्हें महत्वाकांक्षी रचनात्मक और बुद्धिमान लोगों के बिना हल नहीं किया जा सकता है जो अपने ज्ञान से दुनिया को बदलने के लिए तैयार हैं। यही कारण है कि शिक्षा को गंभीरता से लेना किसी व्यक्ति के लिए न केवल एक महत्वपूर्ण निर्णय है बल्कि सामाजिक रूप से जिम्मेदार व्यवहार भी है। प्रत्येक व्यक्ति में दुनिया को बदलने की शक्ति है। एकमात्र दुविधा है– कैसे? इस प्रश्न का एक भी सही उत्तर नहीं है। लेकिन एक अच्छे दृष्टिकोण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कड़ी मेहनत, नवाचार और रचनात्मकता के साथ हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि समाज अच्छे हाथों में रहेगा।

वर्तमान समाज में शिक्षा का स्वरूप शिक्षा आज की दुनिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और इसका मतलब केवल किताबी ज्ञान नहीं है बल्कि इसमें बच्चों और छात्रों का संपूर्ण सामाजिक और शैक्षणिक विकास शामिल है ताकि उनमें आत्मविश्वास के साथ दुनिया का सामना करने की क्षमता विकसित हो और वे समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। इस पेपर का उद्देश्य वर्तमान दुनिया

में शिक्षा के प्रभाव का पता लगाना है क्योंकि मैं इस तथ्य से सहमत हूँ कि शिक्षा न केवल विशेष व्यक्ति के लिए बल्कि सामान्य रूप से पूरे समाज के लिए उन्नति का एक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली साधन है। शोध इस बात की पुष्टि करता है कि छात्रों को शिक्षा के माध्यम से जो शैक्षणिक और व्यक्तिपरक अनुभव प्राप्त होता है वह व्यक्तिगत और सामाजिक प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। (कोहेन 2006) आज के समय में शिक्षा एक ऐसा उपकरण है जिसका उपयोग समाज को बदलने के लिए किया जा सकता है और किसी भी समाज के सामाजिक विकास के लिए उत्तम साधन है। किसी भी संस्कृति के फलने–फूलने के लिए शिक्षा प्रणाली सुदृढ़ होनी चाहिए। शिक्षा व्यक्तियों के मन में जागरूकता जिम्मेदारी की एक नई भावना परिवर्तन और प्रगति के लिए खुलापन पैदा करती है ये सभी समाज के विकास में महत्वपूर्ण कारक हैं।

आधुनिक दुनिया में शिक्षा किताबों और डिग्रियों से कहीं अधिक है और इसमें दिमाग को एक पूरी नई दुनिया के लिए खोलना भी शामिल है एक ऐसी दुनिया जिसमें ज्ञान के लिए कोई भौगोलिक बाधाएं नहीं हैं। शिक्षा वास्तव में हमारे मन से लिंग वर्ग जाति या नस्ल से संबंधित पूर्वाग्रहों को दूर करने का एक सशक्त माध्यम है। एक शिक्षित व्यक्ति आम तौर पर मानव जाति का उसके सभी रूपों का सम्मान करेगा। शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करना नहीं है। यह व्यक्ति की जीवन में आने वाली विभिन्न स्थितियों को सोचने और समझने की क्षमता को विकसित और बढ़ाता है। शिक्षाविद् के संज्ञानात्मक विकास और प्रगति का स्पष्ट रूप से उस संस्कृति और समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा जिसमें वह जीवित रहेगा। शिक्षा हमें जीवन में प्राथमिक चिंताओं विशेषकर प्रदूषण के बारे में गहराई से सोचने में सक्षम बनाती है। मानवता के इतिहास में पृथ्वी और उसके पर्यावरण की सुरक्षा पर इतना ध्यान कभी नहीं दिया गया। शिक्षित लोगों के रूप में, हम पृथ्वी और उसके वातावरण की रक्षा में अपनी जिम्मेदारियों को जानते और महसूस करते हैं। उच्च शैक्षिक सोच व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार की इच्छा को भी बढ़ावा देती है। जिन देशों में शैक्षणिक गतिविधियां बढ़ रही हैं वहां युवा अधिक परिपक्व और संतुलित हैं। इससे पूरे देश के परिदृश्य में सुधार होता है क्योंकि आपराधिक गतिविधियाँ कम हो जाती हैं।

विस्तार वैश्वीकरण के इस युग में शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है और आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करने के अलावा शिक्षा के लाभ असंख्य हैं न केवल एक व्यक्ति के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए। जो अंततः किसी भी छोटे या बड़े राष्ट्र की सफलता में सबसे अधिक प्रभावशाली कारक है। शिक्षा खिड़की नहीं है बल्कि नए वैश्विक समुदाय का प्रवेश द्वार है। अधिक स्थिरता प्रदान करके शिक्षा व्यक्तियों के आत्मविश्वास के स्तर को बेहद सकारात्मक तरीके से प्रभावित करती है। जिससे दुनिया में अभी और हमेशा के लिए बड़ी सफलता की कहानियों का मार्ग प्रशस्त होता है। आधुनिक शिक्षा छात्रों को पूरे मानव समुदाय को स्वीकार करना और सम्मान करना सिखाती है और यह उच्च वेतन वाली नौकरी प्राप्त करने के उद्देश्य से एक अच्छी डिग्री से कहीं अधिक है। तर्कसंगत और तार्किक सोच हमेशा से ही विद्वान और शिक्षित लोगों से जुड़ी रही है। शिक्षा में उत्कृष्टता व्यक्ति के दिमाग को किसी भी स्थिति में जीवन से जुड़े मुद्दों के बारे में सोचने के लिए खोलती है।

सन्दर्भ

1. कोहेन, जे. (2006). सामाजिक भावनात्मक नैतिक और शैक्षणिक शिक्षा सीखने लोकतंत्र में भागीदारी और कल्याण के लिए माहौल बनाना. हार्वर्ड एजुकेशनल रिव्यू. वॉल्यूम. 73, क्रमांक 2.

2. कपिल, एच०के० (1987). अनुसंधान विधियाँ. हर प्रसाद भार्गव प्रकाशनः आगरा।
3. पाठक, पी०डी० (2007). भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें. इक्कीसवाँ संस्करण. विनोद पुस्तक मंदिरः आगरा।
4. प्रिया, नीरज. (2006). शिक्षक सामाजिक परिवर्तन का अभिकर्ता भारतीय आधुनिक शिक्षा एन सी ई आर टी वर्ष 24 अंक 3 पृष्ठ **15–16.**
5. बसु, दुर्गादास. (1997). भारत का संविधान एक परिचय. सातवां संस्करण. प्रेंटिस हाल आफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेडः नई दिल्ली।
6. दुबे, श्यामाचरण. (1994). शिक्षा समाज और भविष्यः राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा० लि०ः नई दिल्ली।
7. राय, पारसनाथ. (2004). अनुसंधान परिचय लक्ष्मीनारायण अग्रवालः आगरा।
8. रूहेला, सत्यपाल. (1992). भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र. चतुर्थ संस्करण. राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमीः जयपुर।